ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 08 जून 2025

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 08 जून 2025 से 14 जून 2025

ज्येष्ठ शु. 12 • वि० सं०-2081 • वर्ष 66, अंक 23, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 • सृष्टि-संवत् 1,97,29,49,125 • पृ.सं. 1-12 • मूल्य - 5/- रू. • वार्षिक शु. 300/- रू.

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित

सभा का 130वाँ वार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का 130वाँ वार्षिक साधारण अधिवेशन 01 जून 2025 को आर्यसमाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के सभागार में माननीय सभा प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सम्मलेन में हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, बिहार, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और राजस्थान से आए 230 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी को पुनः निर्विरोध रूप से वर्ष 2025–2026 के लिए सभा प्रधान निर्वाचित किया गया।

उप–प्रधान पद के लिए श्री प्रबोध महाजन, मंत्री पद के लिए श्री एस. के. शर्मा, सहमंत्री पद के लिए श्री सत्यपाल आर्य एवं श्री अजय सहगल, कोषाध्यक्ष पद के लिए श्री अशोक कुमार अदलखा एवं पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर श्री जे. पी. शूर निर्वाचित किये गये।

वर्ष 2025–26 के लिए निर्वाचित प्रधान डॉ. पूनम सूरी एवं अन्य पदाधिकारी

'हम प्रतिदिन ईश्वर के सर्वश्रेष्ठ नाम का प्रातः सन्ध्या जाप करने का संकल्प लेते हैं'

नवनिर्वाचित सभा प्रधान डॉ. पूनम सूरी ने सदन को सम्बोधित करते हुए उन पर प्रदर्शित विश्वास के लिए धन्यवाद किया और कहा कि आज अंहकार ने मानव को घेर लिया है। उन्होंने पर और अपर ब्रह्म का भेद बताते हुए कहा कि अपने लिए मोक्ष की कामना करने की जगह मानव, समाज और राष्ट्र के कल्याण में स्वयं को लगा देना एक बेहतर विचार है।

डीएवी के स्थापना दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए मान्य प्रधान जी ने उपस्थित सभासदों को **'ओ३म्'** का जाप करने की विधि बताई और आह्वान किया कि आज सब संकल्प लें कि प्रत्येक सभासद **ओ३म्** का जप करेगा और हमारे विद्यालयों में हर कक्षा में सबसे पहले तीन बार **ओ३म्** का जाप किया जायेगा। उपस्थित सभासदों ने हाथ उठाकर इस संकल्प को धारण किया।

ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना मंत्रों के बाद विचारणीय विषयों पर चर्चा आरम्भ हुई।

सभा मंत्री ने वर्ष 2024–25 की गतिविधियों का विवरण एवं बजट प्रस्तुत किया, जिसकी सर्वसम्मति से

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

श्री फणीश पंवार भजन प्रस्तुत करते हुए

श्रीमती रशिम घई भजन प्रस्तुत करते हुए

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक - पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 08 जून 2025 से 14 जून 2025

ब्रह्म-कवच से रक्षित

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं, कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च।
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या याः, मा मानुषीरवसृष्टा वधाय।।

अथर्व17.1.28

ऋषिः **ब्रह्मा।** देवता **आदित्यः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● (**अहं**) मैं (**ब्रह्मणा**) ब्रह्म–रूप (**वर्मणा**) कवच से [तथा] (**कश्यपस्य**) द्रष्टा आत्मा की (**ज्योतिषा**) ज्योति से (**वर्चसा च**) और वर्चस्विता से (**परीवृतः**) आच्छादित [होऊँ]। (**याः**) जो (**दैव्याः**) दैवी (**इषवः**) बाण हैं, वे (**मा**) मुझे (**मा**) मत (**प्रापन्**) प्राप्त हों, (**मा**) न ही (**बधाय**) वध के लिए (**अवसृष्टाः**) छोड़े हुए (**मानुषी**) [इषवः] मानुषी बाण [प्राप्त हों]।

●संसार में रहते हुए मुझे अनेक दैवी और मानुषी विपत्तियों से संघर्ष करना है। देखो, कैसे–कैसे दैवी बाणों का मुझपर प्रहार हो रहा है। कभी भूकम्प आ रहे हैं, कभी सर्वनाशिनी आँधियाँ चल रही हैं, कभी असमय ओले वरस रहे हैं, कभी ज्वालामुखी फूट रहे हैं, कभी अतिवृष्टियाँ और अनावृष्टियाँ हो रही हैं, कभी दुर्भिक्ष पड़ रहे हैं, कभी नदियों में विनाशलीला मचा देनेवाली बाढ़े आ रही हैं, कभी उल्कापातों की झड़ी लग रही है कभी भूमि फट रही है, कभी ऋतुओं में अव्यवस्था हो रही है, कभी महामारियाँ फैल रही हैं। इन सब दैवी बाणों के प्रहार मुझ मानव को क्षणभर में नष्ट–भ्रष्ट कर सकते हैं। दूसरी और मानुषी बाणों पर,मनुष्य द्वारा उत्पन्न की गई विपत्तियों पर भी दृष्टिपात करो। तलवारें खनखना रही हैं, तोपें गोले बरसा रही हैं, बन्दूको की गोलियाँ सिर पर से निकट रही है, संधातक विस्फोट किये जा रहे हैं। ऐटम–बम छोड़े जा रहे हैं, विषैली गैसें फैलाई जा रही हैं, नये–से–नये संहारक आविष्कार किये जा रहे हैं। इन सब मानुषी बाणों से भी मैं विपद्ग्रस्त तथा जर्जर हो गया हूँ, और मानव–जाति संहार के कगार पर खड़ी प्रतीत हो रही है।

इस प्रकार के दैवी और मानवी बाणों के प्रहार से बचने का एक उपाय यह है कि मैं ब्रह्म का कवच धारण कर लूँ। ब्रह्म का कवच पहनते ही हृदय में धैर्य , आश्वासन और बड़े का सहारा प्राप्त कर लेने का सन्तोष जागृत होगा और जैसे सेनापति के साथ होने पर सैनिकों में उत्साह की लहरें हिलोरें मारती रहती हैं वैसे ही मेरे अन्दर संकटो से जूझने का उत्साह बना रहेगा। इन बाणों से आत्मा–रक्षा का दूसरा उपाय यह है कि मैं द्रष्टा आत्मा (कश्यप) की ज्योति और वर्चस्विता से अनुप्राणित हो जाऊँ। मेरे आत्मा में जो शक्ति निहित है, उसे पहचानूँ। आत्मा में जो अमरता की ज्योति जग रही है उसके दर्शन करुँ तथा इस भावना को अपने अन्दर जगाऊँ कि आत्मा अमर है, अतः संघर्षों से घबराना क्या! इस प्रकार ब्रह्म–कवच और कश्यप आत्मा की ज्योति से आच्छादित होकर मैं समस्त दैवी और मानुषी वाणों से आत्म–रक्षा में समर्थ हो सकता हूँ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्वज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

राम की व्यथा कथा का प्रसंग समाप्त करते हुए स्वामी जी ने श्री राम द्वारा ऋषि विश्वामित्र और गुरुवसिष्ठ के सामने रखी जिज्ञासा का संकेत किया कि जगत् के पूर्वापर को जानकर पारामार्थिक तत्त्व को कैसे जाना जाए ?

तत्त्वज्ञान का अधिकारी कौन है ? यह प्रश्न उठाकर स्वामी जी ने कहा–तत्त्वज्ञान प्राप्त किए बिना सांसारिक दुःखों से छुटकारा नहीं पाया जा सकता है। इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए स्वयं को अधिकारी बनाना होगा। 'तत्त्वज्ञान' के प्रसंग में अभी तक जो लिखा जा चुका है उसका प्रयोजन यही था कि किसी प्रकार हम उस अवस्था में पहुँच जायें जहाँ 'तत्त्व' के स्वरूप को भली भाँति समझा जा सके। स्वामी जी ने वासनाक्षय से लेकर सभी विषयों को संक्षेप में दोहरा दिया।

स्वामी जी ने कहा कि तत्त्वज्ञान का अधिकार केवल मनुष्य मात्र को है। इसके चार साधन हैं – नित्यानित्यवस्तुविवेक, इहामुत्रार्थ फलभोग विरागः, शमदमादिषट्क सम्पत्तिः और मुमुक्षुत्व। इन चारों पर चर्चा आरम्भ की।

ईश्वर, जीव, प्रकृति यह तीन तत्त्व नित्य हैं शेष सब दृश्यमान संसार अनित्य है। इस विषय में गीता, श्वेताश्वतरोपनिषद् से प्रमाण प्रस्तुत किए। अविद्या के चार रूपों का वर्णन योगदर्शन के आधार पर किया। तीसरे रूप तक चर्चा हुई।

..... अब आगे

राजनीति के क्षेत्र में अविद्या

राजनीति के क्षेत्र में अविद्या के इस रूप को देखिए तो स्पष्ट हो जाएगा। इस भ्रम ने कि देश–विभाजन से सुख हो जाएगा और हिन्दू–मुस्लिम समस्या ठीक हो जाएगी, कितना बड़ा भारी दुःख उत्पन्न कर दिया ! ऐसे ही यह भ्रम कि कश्मीर का प्रश्न सुरक्षा कौंसिल में ले जाने से भारत का यह दुःख शीघ्र मिट जाएगा, कितना भयंकर सिद्ध हो रहा है ! ऐसे ही राजनीति के क्षेत्र में और कितने ही भ्रम हैं जिन्हें सुख समझा गया परन्तु वे दुःख ही सिद्ध हुए। थोड़ा दृष्टि को और विशाल कीजिए तो प्रकट हो जाएगा कि दुनिया के देशों में आज जो अशान्ति, वैमनस्य तथा युद्ध की अग्नि चमक रही है, इसका मूल कारण यही है कि दुनिया अविद्या के इस तीसरे रूप के जाल में फँस चुकी है। दुःख को सुख और सुख को दुःख समझा जाने लगा है। माया, धन, रोटी, ऐटमबम, युद्ध–सामग्री, शारीरिक लाभ, इन्हीं को सुख समझा जा रहा है। प्रभुभक्ति, दया, दान, परोपकार, शान्ति, अहिंसा तथा तप आदि को जंगली लोगों की कथाएँ मानकर इन्हें दुःख समझा जाने लगा है।

आत्म और अनात्म

चौथा रूप अविद्या का यह है कि अनात्म में आत्म–बुद्धि कर लेना, है तो जड़ परन्तु उसे चेतन समझना और जहाँ आत्मा है उसे जड़ मान लेना। अविद्या के इस चौथे रूप ने भारतवासियों और अन्य देशवासियों को भी भारी भ्रम में डाल दिया है। अनात्म वस्तुओं को आत्मा समझकर उनके लिए क्या कुछ न कर डाला ! यहाँ तक कि दुनिया ने आत्मा को सर्वथा विस्मृत कर दिया और अनात्म वस्तुओं की मान–पूजा इत्यादि होने लगी।

जब तक साधक में विवेक–बुद्धि उत्पन्न नहीं होती और वह यह निश्चय नहीं कर लेता कि ईश्वर, जीव, प्रकृति तीनों अनादि हैं, तब तक वह इस मार्ग पर आगे बढ़ नहीं सकता। इन तीनों में अन्तर इतना ही है कि प्रकृति तो केवल सत्य है, जीवात्मा सत्य भी है और साथ ही चित्त् भी है और परमात्मा जहाँ सत्य भी है, चित् भी है, वहाँ आनन्द भी है। इन तीनों का विवेक पहली मंजिल है।

महर्षि दयानन्द की व्याख्या

नित्यानित्य–विवेक के सम्बन्ध में महर्षि स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थप्रकाश' के नवम समुल्लास में यह व्याख्या की है :

"सत्पुरुषों के संग से 'विवेक' अर्थात् सत्यासत्य, धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का निश्चय अवश्य कर, पृथक्–पृथक् जानें और शरीर अर्थात् जीव पंच कोषों का विवेचन करें। एक–**'अन्नमय'** जो त्वचा

☞ पृष्ठ 01 का शेष

130वाँ वार्षिक अधिवेशन ...

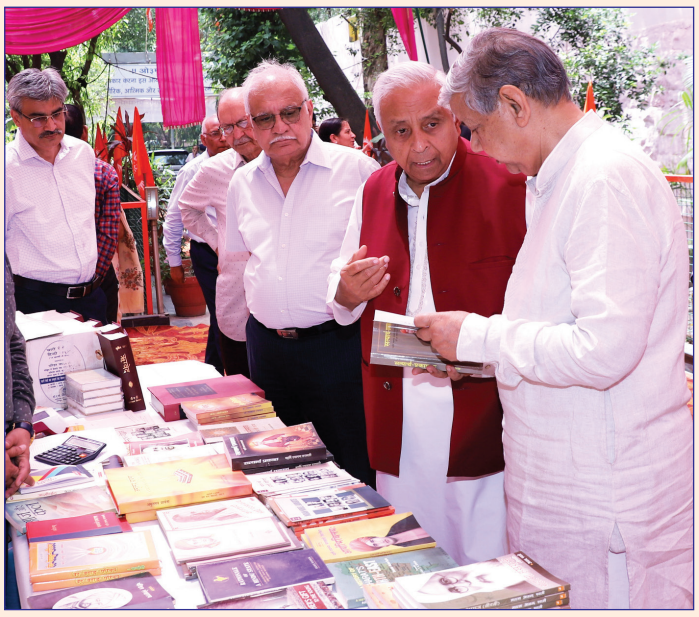

पुष्टि हुई। श्री सत्यपाल आर्य जी द्वारा तैयार की गई इस विवरण पुस्तिका की प्रशंसा हुई।

उपस्थित प्रतिनिधियों और अधिकारियों से सभा के कार्यों को गतिशील बनाने के लिए सुझाव मांगे गये, जिसमें श्री अजय सहगल दिल्ली, श्री लखीराम फौजी (करनाल) श्री सत्यपाल आर्य (उपसभा, हरियाणा), डॉ. प्रमोद योगार्थी (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय) आदि ने मान्य प्रधान जी के नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए सभा को अधिक सक्रिय और गतिशील बनाने के सुझाव दिये।

सभा मंत्री द्वारा हाल ही में 'महात्मा अमर स्वामी के ग्रन्थों का संग्रह' नाम से प्रकाशित पुस्तक का विवरण देते हुए महात्मा अमर स्वामी जी के आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के साथ मधुर संबन्धों का विवरण दिया।

मंत्री जी ने महात्मा अमर स्वामी द्वारा लिखित 'आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का इतिहास' प्रकाशित करने का प्रस्ताव रखा। जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

इससे पूर्व मौसम विहार के संगीत शिक्षक श्री फणीश पंवार एवं जालंधर से आईं श्रीमती रशिम घई जी ने मधुर भजनों से वातावरण भक्तिमय बना दिया।

पिछले अधिवेशन के बाद दिवंगत आर्य विभूतियों को श्रद्धांजलि देते हुए शोक प्रस्ताव पारित हुए।

डीएवी प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित, आर्य विद्वान श्री भावेश मेरजा द्वारा सम्पादित पुस्तक **'सत्यार्थ प्रकाशक'** का विमोचन सभा प्रधान जी के कर कमलों से संपन्न हुआ। इसके साथ ही पंजाब उपसभा तथा आर्ययुवा समाज द्वारा प्रकाशित विवरण पुस्तिकाओं का विमोचन हुआ। डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा लिखित तीन पुस्तकों का प्रधान जी के द्वारा लोकर्पण किया गया।

शांति पाठ और सहभोज के साथ कार्यवाही सम्पन्न हुई।

डी.ए.वी. ठाणे में आयोजित हुआ महाराष्ट्र-दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, ठाणे में महाराष्ट्र दिवस बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस विशेष दिन के उपलक्ष्य में डी.ए.वी. विद्यालय में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के सदस्य, छात्रों एवं विद्यालय के शिक्षकसमूह विद्यालय में आयोजित हवनकार्य में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम की ध्वजारोहण के उपरान्त डी.ए.वी. गान के साथ हुई। तदनन्तर दीपप्रज्ज्वलन के साथ यज्ञ सम्पादित किया गया। हवन में सम्मिलित आर्यों ने "यज्ञ रूप प्रभो हमारे....." गीत गाकर वातावरण सुन्दर बना दिया।

विद्यालय की शिक्षिकाओं द्वारा कुछ विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये जिसमें महाराष्ट्र प्रदेश की गरिमा को उजागर किया गया। विद्यालय में आये हुए छात्र समूह ने भी अत्यन्त मनोहारी मराठी भाषा में गीत गाकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। शिक्षकों और छात्रों के मधुर गीत एवं लावणी नृत्य से वातावरण सुशोभित हो गया। कुछ शिक्षिकाओं द्वारा मराठी भाषा में कविता भी प्रस्तुत की गई। साथ ही पी.पी.टी. माध्यम से महाराष्ट्र प्रदेश की विशेषताओं का ज्ञान उपस्थित जनों को कराया गया। छात्र एवं शिक्षक समूह ने पारंपरिक वेषभूषा धारण करके वातावरण को उल्लासमय बना दिया था।

प्रधानाचार्या ने सभी लोगों को मराठी भाषा को सीखने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हम जिस प्रान्त में रहते हैं उसकी भाषा हमें आनी चाहिए। उन्होंने सभी को मजदूर दिवस की भी शुभकामना दी और डी.ए.वी. परिवार में एकजुट रहकर सतत कार्य करते रहने को कहा। मुख्यातिथि ने भी विद्यालय के कार्य की प्रशंसा की और शिक्षकों को उनके उत्तम कार्य के लिए साधुवाद दिया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की गई।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2025

गुरुकुल पौंधा-देहरादून का रजत जयन्ती समारोह सोल्लास आरम्भ

श्री मद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, देहरादून का तीन दिवसीय रजत जयन्ती समारोह शुक्रवार दिनांक 30 मई, 2025 को सोल्लास आरम्भ हुआ। भव्य यज्ञशाला में चार यज्ञ वेदियों पर आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद पारायण यज्ञ जारी रहा। यज्ञ वेदियों के चारों ओर यजमानों सहित देश के अनेक भागों से पधारे बड़ी संख्या में ऋषिभक्त उपस्थित रहे।

ध्वजारोहण पर राष्ट्रीय प्रार्थना सहित ध्वज गीत का गान हुआ। ध्वजारोहण स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी सहित परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री कन्हैयालाल आर्य जी ने किया। श्री कन्हैया लाल जी एवं गुरुकुल के आचार्य डॉ. धनंजय आर्य जी ने इस अवसर पर संक्षिप्त सम्बोधन भी दिया।

उद्घाटन समारोह का आयोजन विशेष रूप से तैयार किये गये पण्डाल में हुआ। इस सम्मेलन को स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी आर्यवेश जी, श्री विट्ठलराव आर्य, श्री विनय आर्य जी, आचार्य वाचस्पति जी, देशबन्धु आर्य, श्री कन्हैया लाल आर्य आदि विद्वानों ने सम्बोधित किया। इसके बाद स्वाध्याय सम्मेलन, संस्कार सम्मेलन सम्पन्न किए गये।

रात्रि में भजनों एवं गीतों के माध्यम से आर्य हुतात्माओं को श्रद्धांजलि दी गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सारस्वत मोहन मनीषी जी ने की।

गुरुकुल पौंधा का यह समारोह देहरादून में आर्यसमाज के 146 वर्षों के इतिहास में अभूतपूर्व रहा। देश भर से सहस्रों की संख्या में ऋषिभक्त स्त्री व पुरुष इस आयोजन में सम्मिलित हुए। प्रमुख विद्वानों में डॉ. रघुवीर आर्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य सत्यजित्, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. वेदपाल, डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री, डॉ. सोमदेव शास्त्री, स्वामी ऋतस्पति जी, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, डॉ. प्रीति विमर्शिनी, डॉ. सूर्यादेवी, डॉ. धारणा याज्ञिकी, स्वामी आदित्यवेश, डॉ. आनन्द कुमार, डॉ. बलबीर आर्य, श्री योगानन्द शास्त्री, आचार्या डॉ. अन्नपूर्णा आदि सम्मिलित हुए।

डीएवी बरमाणा ने वृद्धाश्रम (अपना घर) में किया मासिक यज्ञ

वृद्धाश्रम (अपना घर) में मासिक यज्ञ का आयोजन डी ए वी (ए सी सी) सी. सै. पब्लिक पाठशाला के सौजन्य से किया गया। वैदिक समिति के सदस्यों ने वृद्धजनों के साथ मिलकर यज्ञ का आयोजन किया।

75 वर्ष की आयु वाले बुजुर्ग ने मुख्य यजमान की भूमिका निभाई। वहां पर उपस्थित सभी वृद्धों ने यज्ञ में आहुतियां डालकर इस पुण्य अवसर का लाभ लिया। उनके चेहरों की रौनक देखकर सभी बहुत हर्षित हुए। वृद्धाश्रम के सभी सदस्यों ने अपने मन की प्रसन्नता को भजनों और नृत्य के माध्यम से व्यक्त किया।

पाठशाला की तरफ से कुछ खाद्य सामग्री और कुछ धन राशि वितरित की गई। इस समूचे कार्य का श्रेय पाठशाला के प्रधानाचार्य श्रीमान सुनील गांगटा जी को जाता है। उनके मार्गदर्शन के बिना यह कार्य संभव नहीं था।

ओलंपिक्स ब्रॉन्ज विजेता सरबजोत सिंह पहुंचे पुलिस डीएवी अम्बाला शहर

पुलिस डीएवी पब्लिक स्कूल, अंबाला शहर में एक गौरवपूर्ण क्षण देखने को मिला जब 2024 पेरिस ओलंपिक्स के ब्रॉन्ज मेडल विजेता एवं अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित शूटिंग खिलाड़ी सरबजोत सिंह अपने कोच अभिषेक राणा के साथ विद्यालय में पधारे। स्पोर्ट्स में पदक जीतने वाले 150 विजेता खिलाडियों को इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

विद्यालय के प्राचार्य डॉ. विकास कोहली ने कहा, "सरबजोत सिंह जैसे ओलंपियन का हमारे विद्यालय में आना न सिर्फ हमारे लिए सम्मान की बात है, बल्कि हमारे विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणादायक है। उन्होंने बताया कि इस तरह के कार्यक्रम छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। उनके अनुभव और मार्गदर्शन से हमारे छात्रों को नई दिशा मिलेगी।"

अभिषेक राणा, कोच व अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षक ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा, "संघर्ष ही सफलता की कुंजी है। यदि आप लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखें और निरंतर अभ्यास करें, तो एक दिन ओलंपिक तक पहुँचना भी संभव है।" उन्होंने छात्रों को खेलों में निरंतर मेहनत और अनुशासन बनाए रखने की प्रेरणा दी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**